International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 07 Issue 12 Ver. I ||December, 2018 || PP. 88-92

स्वतंत्रता आन्दोलन और काशी की पत्रकारिता 1930–1942 ई.

अनुराधा सिंह
पी–एच0डी0 एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी–221005

काशी में बौद्धिकता, विद्वता एवं पत्रकारिता का लम्बा इतिहास रहा है, इसके साथ ही काशी को ज्ञान की नगरी भी कहा जाता रहा है। विशेष रूप से हिंदी पत्रकारिता के मामले में काशी अग्रणी रही है। जब देश भर में राष्ट्रीय आंदोलन आज़ादी की राह पर चल रहा था तो काशी की पत्रकारिता अपना योगदान देने में सबसे आगे थी और अपनी सक्रिय भूमिका निभाने में सफल रही।

सन 1930 ई. में नमक आंदोलन अपने चरम पर था। उस समय समाचार–पत्रों के उग्र विचार एवं संपूर्ण भारतीय नवजागरण का स्वरूप ब्रिटिश सरकार को भयभीत करने वाला था। जिससे ब्रिटिश सरकार ने आशंकित होकर भारतीय समाचार–पत्रों के दमन के लिए प्रेस ऑर्डिनेंस जारी किया, जो कि भारतीय समाचार–पत्रों के लिए काल जैसा साबित हुआ। देश में जब समाचार पत्रों की आजादी छीनने का प्रयास किया गया तब स्वाभिमानी पत्रकारों, लेखकों ने भूमिगत पत्रों का प्रकाशन कर कड़े संघर्ष का परिचय दिया। इन समाचार पत्रों ने ब्रिटिश सरकार की जड़ें हिला दीं और यह आभास कराया कि जनता की आवाज बंद करने का परिणाम संघर्ष की आग में घी जैसा है। 1930, 1932 और 1942 ई. में जब–जब समाचार पत्रों पर कुठाराघात किया गया तब–तब भूमिगत पत्रों का प्रकाशन हुआ और सबसे खास बात यह रही कि इन भूमिगत पत्रों का प्रकाशन क्रांतिकारी तरीके से किया गया और इनके विचार सर्वदा क्रांतिकारी रहे।

'अनऑथराइज्ड न्यूज़ सीट एंड न्यूज़ पेपर ऑर्डिनेंस' (2 जुलाई,1930 ई.)– इस नए अध्यादेश के अनुसार न्यूज़ पेपर का तात्पर्य किसी प्रकार के नियत कालीन प्रकाशन से था, जिसमें सार्वजनिक समाचार व टिप्पणियां हो तथा न्यूज़ सीट से तात्पर्य किसी प्रकार के अन्य कालीन प्रकाशन से था, जिसमें सार्वजनिक समाचार प्रकाशित हो तथा अनऑथराइज्ड न्यूज़ पेपर ऐसे किसी समाचार पत्र को माना गया, जिससे पूर्ववर्ती अध्यादेश के अनुसार जमानत मांगी गई हो। इसके अनुसार सरकारी अधिकारियों की तलाशी, उपरोक्त प्रकार के वर्णित पत्र–पत्रिकाओं की जब्ती, उन्हें नष्ट करने और अघोषित छापा खानों को ज़ब्त करने का अधिकार प्रदान किया गया।[1]

उस समय समाचारों के लिए एवं भारतीय जनता में उत्साह एवं जागरूकता भरने के लिए काशी से प्रकाशित 'आज' समाचार–पत्र सर्वप्रिय एवं सर्वाधिक सक्रिय था। 1930 ई. में प्रेस ऑर्डिनेंस के तहत 'आज' अखबार को भी बंद कर देना पड़ा। 'आज' का प्रकाशन बंद हो जाने के बाद 'आज के समाचार' से निर्मित बुलेटिन साइक्लोस्टाइल पर छपने लगा। परंतु इसके एक माह के बाद दूसरा ऑर्डिनेंस जारी हुआ उसके बाद इस पत्र को भी बंद कर देना पड़ा।[2]

'आज' के आरंभिक संपादक श्री प्रकाश एवं पंडित बाबूराव विष्णु पराड़कर थे। श्री प्रकाश जहां गांधीवादी आदर्शों के प्रतीक थे, वहीं पराड़कर क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित थे और पत्रकारिता के साथ ही क्रांतिकारी गतिविधियों से परिपूर्ण थे। विष्णु पराड़कर जी लोकमान्य तिलक से प्रभावित थे। 'आज' के माध्यम से पराड़कर जी की लेखनी दूर–दूर तक लोगों में संघर्ष एवं उत्साह भरती थी। उनकी लेखनी एक ओर सत्याग्रह के लोक प्रवाह का उद्गम प्रतीक हुआ करती थी तो दूसरी और इसमें क्रांति की चिंगारी भी उठती दिखाई पड़ती थी। जब 'आज' का प्रकाशन पूरी तरह बंद हो गया तो रणभेरी नामक गुप्त पत्र का प्रकाशन हुआ। इस भूमिगत पत्र का श्री–गणेश तथा 'रणभेरी' का नामकरण बाबू विष्णु राव पराड़कर ने ही किया था।

सर्वप्रथम 'रणभेरी' का प्रकाशन जुलाई, 1930 ई. में हुआ। इस पत्र का प्रकाशन चोरी–छिपे काशी के बहुत से गली–मोहल्लों से प्रकाशित होता रहा। यह स्पष्ट रूप से कहना मुश्किल है कि किन–किन परिस्थितियों में कहाँ–कहाँ से यह पत्र छप रहा था। ब्रिटिश अधिकारियों एवं पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए बड़ी चतुराई से, गुप्त रूप से 'रणभेरी' को भिन्न–भिन्न स्थानों पर छापा जाता था। शुरू–शुरू में यह 'आज' प्रेस के दफ्तरी खाने में साइक्लोस्टाइल में छपता था और इसके छापने में गोपनीयता भी रखी जाती थी। पराड़कर के छोटे भाई श्री माधव विष्णु पराड़कर ज्ञान मंडल यंत्रालय के व्यवस्थापक थे। कार्यालय में किसी भी संदिग्ध व्यक्ति के प्रवेश के साथ ही ये 'रणभेरी' के कार्यकर्ताओं को सावधान कर देते थे। उनकी टेबल पर बिजली की घंटी लगी थी, बटन दबाते ही सब लोग सावधान हो जाते थे। यह कार्य दो महीने तक चला, इसके बाद 'रणभेरी' छापने की मशीन मैदागिन स्थित रेवाबाई धर्मशाला के एक किराए के कमरे में ले जाकर रखी गई। पुलिस एवं ब्रिटिश अधिकारियों के डर से 'रणभेरी' एक ही स्थान पर छपने के बजाय लगातार अलग–अलग स्थानों पर ले जाई जाती रही। इसके प्रकाशन को लेकर हमेशा सावधानी बरती जाती थी। इसे हमेशा अंधेरे कमरों वाले भुतहे मकानों में ही स्थापित किया जाता था, जहाँ लोगों का आना–जाना कम रहे और यदि पुलिस का छापा पड़े तो किसी के हाथ कुछ भी ना लगे। कई बार ऐसा होता था कि पुलिस का छापा पड़ता था और

सूचना मिलते ही सभी कार्यकर्ता चौकन्ने हो जाते थे और पुलिस के हाथों कुछ भी नहीं लगता था। पुलिस के लौट जाने के बाद उनको पछतावे का एहसास दिलाने एवं उनका मजाक उड़ाने के लिए उनके ऊपर रणभेरी की प्रतियां गिरा दी जाती थीं। 'रणभेरी' का प्रकाशन गंगा में नौकाओं पर भी किया जाता था।

जब गोलमेज सम्मेलन हुआ तो 'रणभेरी' का प्रकाशन बंद कर दिया गया। 1932 ई. में इसे पुनः प्रकाशित करने की योजना बनाई गई, उस समय काशी के प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट के कुंड के ठीक नीचे 'रणभेरी' प्रेस की स्थापना हुई। उस मकान में प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के दल के के. एन. रमन्ना रहते थे। इस मकान के दरवाजे में एक छोटा सा छिद्र बनाया गया था, जिससे बाहर से गुजरने या आने–जाने वाले व्यक्ति की पहचान की जा सके, किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखते ही कार्यकर्ताओं को सावधान कर दिया जा सके। इन कार्यकर्ताओं के नाम जेल के कैदियों के समान होते थे। कार्यकर्ताओं के मूल नाम अक्सर नहीं लिए जाते थे। जैसे– विश्वनाथ–चपरासी, सरयू प्रसाद– फोरमैन आदि। एक दिन वहाँ पर पुलिस का छापा पड़ा और पुलिस के हाथ कुछ भी न लगा। इस प्रकार रणभेरी कई महीने तक छपती रही। तत्कालीन काशी के पत्रकारों, साहित्यकारों, देशभक्तों और साधारण जनता की जागरूकता का प्रमाण उसके इस प्रकाशन इतिहास से स्पष्ट हो जाता है।

'रणभेरी' फुलस्केप के साइज का साइक्लोस्टाइल मशीन पर छपा हुआ हस्तलिखित राजनैतिक पत्र था। इसका दैनिक अंक दो पृष्ठों का, साप्ताहिक आठ पृष्ठों का होता था। दैनिक रणभेरी का मूल्य एक पैसा तथा साप्ताहिक का एक आना था। इसके दैनिक तथा साप्ताहिक दोनों अंको में ओजस्वी समाचारों के अतिरिक्त विद्रोहात्मक लेखों का प्रकाशन होता था। 'रणभेरी' के ही एक अंक में छपा था कि "कल हमारा साप्ताहिक विशेषांक हाथों–हाथ बिक गया था, इससे सिद्ध है कि जनता देशभक्ति से प्रेरित है। इस सप्ताह में हम इस अंक को अधिक उपयोगी बनाएंगे और 5000 प्रतियां छापने का प्रयत्न करेंगे"। इस पत्र के पृष्ठ के ऊपर 'रणभेरी' तथा उसके नीचे बाएं तरफ संपादक का नाम सीताराम अथवा कभी–कभी बाबा घनश्याम दास छपा रहता था, लेकिन ये दोनों नाम फर्जी होते थे। घनश्याम दास काशी के तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट तथा ब्रिटिश सरकार के पिछलग्गू थे, संभवतः इसीलिए मजाकिया अंदाज के लिए उनका नाम संपादक के बतौर छापा जाता था। सरकारी चापलूसों से 'रणभेरी' की एकदम नहीं बनती थी। ऐसे चापलूस जो भारत देश के लिए घातक थे, उनकी निंदा 'रणभेरी' में खुले शब्दों में की जाती थी।

'रणभेरी' में गांधी के लिए समर्थन के भी पुरजोर विचार नजर आते हैं, साथ ही गरम दल के लिए भी प्रबल समर्थन दिखाई पड़ता है। 'रणभेरी' में एक नया महाभारत छेड़ने का आह्वान मिलता है, इसमें कृष्ण– गांधी को और अर्जुन– भारत को बताया गया है। साथ ही 'रणभेरी' यह भी कहती है कि "बम की फिलासफी पर विश्वास करने वाले भाइयों घबराओ मत, एक बार इस नए कृष्ण और नए अर्जुन का महाभारत मच जाने दो, कौन कह सकता है कि यह मार्ग सफल होगा ही नहीं? याद रखो कि इस कमबख्त ब्रिटिश हुकूमत के दिन पूरे हो चुके। सत्य और अहिंसा से जाए या बम और पिस्तौल से इसे जहन्नुम जाना ही पड़ेगा। इसी से फिर कहते हैं घबराओ मत"।[3]

'रणभेरी' का राष्ट्र के प्रति जुनून अप्रतिम था उसका एक ही मात्र उद्देश्य था– स्वराज्य की प्राप्ति। स्वराज के लिए उसके कार्यकर्ता मर मिटने को तैयार रहते थे। 'रणभेरी' ने ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार के लिए भी बहुत जोर लगाया। इसके लेखों में ब्रिटिश सरकार की निंदा बराबर होती रही। ब्रिटिश सरकार की काली करतूतों का पर्दाफाश करने के लिए 'रणभेरी' हमेशा तैयार रहती थी। 'रणभेरी' के प्रकाशन को लेकर ब्रिटिश सरकार तथा पुलिस बहुत अधिक परेशान रहती थी। 'रणभेरी' का बहुत ढूंढने पर भी कोई पता नहीं चल रहा था। इसका प्रकाशन कहाँ से और किस तरह से हो रहा है पुलिस ने ज्ञानमंडल यंत्रालय में छापा मारा और यंत्रालय की तलाशी ली। दो–तीन घंटे उलट–पुलट करने के बाद पुलिस कुछ 'रणभेरी' की प्रतियां और मशीन चलाने की मोटर उठा ले गई। उसी दिन से ज्ञानमंडल पर पुलिस का पहरा बैठ गया। साथ ही 'रणभेरी' को पुलिस वालों ने राजघाट के मैदान में, झाड़ी और बालू में भी ढूंढा लेकिन पता ना चला। अत्यधिक परेशान होने के बावजूद पुलिस ने बर्बरता का भी रुख अपनाया उसने बहुत से संदिग्ध लोगों की पिटाई की उन पर जुल्म ढाया किंतु रणभेरी अपने कार्य में लगी रही।

इससे प्रमाणित होता है कि रणभेरी ने काशी की पत्रकारिता की टूट रही कड़ी को जोड़ने के साथ–साथ राष्ट्रीय आंदोलन को सशक्त बनाने का प्रयास किया है। जिस समय ब्रिटिश सरकार ने सभी समाचार पत्रों की जुबान पर ताले लगा दिए थे उस वक्त में साहस का परिचय देते हुए 'रणभेरी' ने सिद्ध कर दिया कि पत्र जनता के संवाहक होते हैं, इस कारण इस पर कोई रोक नहीं लगा सकता। रोक लगाने का मतलब है भयंकर विस्फोट का होना और 'रणभेरी' ने खबरों की दुनिया में एक आग लगा दी थी, जो ब्रिटिश हुकूमत तक को झुलसा रही थी।

'रणभेरी' के साथ–साथ और भी पत्र गुप्त रूप से निकाले जा रहे थे। जिनमें 'रणडंका', 'शंखनाद', 'चिंगारी', 'ज्वालामुखी', 'रणचंडी', 'तूफान' और 'चंडिका' प्रमुख थे।

'रणभेरी' की तरह 'रणडंका' भी उस समय प्रशंसनीय लोक सेवा करने में लगा हुआ था। 'रणडंका' का मूल्य एक पैसा था, इसका संपादक एक सैनिक था। इसके मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित निम्नलिखित पंक्तियां उसकी सिद्धांत नीति को प्रकट करती थीं:

हो उथल–पुथल अब देश बीच औ खौले खून जवानों का।

बलि वेदी पर बलि चढ़ने को, चले झुंड मर्दानों का।।[4]

'शंखनाद' का सर्वप्रथम प्रकाशन साइक्लोस्टाइल में 1932 ई. के मार्च महीने में किया गया। यह भी 'रणभेरी' की तरह फुलस्केप साइज का पत्र था। इसके लेखकों में श्री संत शरण मेहरोत्रा, श्री नंदकिशोर बहाल, श्री हीरालाल पहाड़ी, श्री रामचंद्र वर्मा, श्री दुर्गा प्रसाद खत्री, दिनेश दत्त झा, मुंशी प्रेमचंद एवं गंगा शंकर दीक्षित प्रमुख थे। यह पत्र भी गुप्त रूप से, गुप्त लोगों द्वारा, गुप्त जगह से ही छापा जाता था और इसका वितरण भी गुप्त लोगों द्वारा ही किया जाता था। 'शंखनाद' का दैनिक अंक दो पेज का तथा साप्ताहिक चार पेज का होता था पर दोनों का मूल्य एक पैसा रहता था। दैनिक में छोटे–छोटे समाचार तथा टिप्पणियों का प्रकाशन होता था, वहीं साप्ताहिक अंक में समाचारों के अतिरिक्त तेजस्वी लेखकों के भाषण छापे जाते थे। यह पत्र ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय संपत्ति की लूट की चिंता जाहिर करते हुए अक्सर ब्रिटिश नीतियों की निंदा करता था। जहाँ से यह 'शंखनाद' छपता था वह कमरा किराए पर सोडा फैक्ट्री के लिए लेबुल छापने के नाम पर लिया गया था। जिस प्रकार जादूगर अपनी जादुई कला से लोगों को अचंभित कर देता है, उसी प्रकार 'शंखनाद' ने अपने प्रकाशन एवं वितरण के अनोखे तरीके से ब्रिटिश सरकार को आश्चर्यचकित कर रखा था। इन्हीं व्यवस्था एवं तेजस्विता के कारण इस पत्र का प्रांतीय महत्व बढ़ गया था। तभी तो इसे पकड़ने के लिए सरकार की तरफ से दस हजार रुपए ईनाम घोषित हुए थे। कड़ी मशक्कत के बावजूद भी सरकार इसके प्रकाशकों को पकड़ नहीं पा रही थी।

'ज्वालामुखी' भी साइक्लोस्टाइल मशीन पर हाथ से लिख कर छपने वाला भूमिगत समाचार पत्र था। इस पत्र के संपादक का नाम "बागी" दिया गया था, जो काल्पनिक नाम था। इस समाचार पत्र का मूल्य एक पैसा होता था। 'रणचंडी' के अनुसार–"बनारस में दो साइक्लोस्टाइल से छपे हुए साप्ताहिक पत्र निकालने लगे हैं, जिनमें 'रेडलेम' इंग्लिश का है तथा 'ज्वालामुखी' हिंदी का है"। 'ज्वालामुखी' को स्पष्ट करते हुए प्रथम अंक में ही यह लिखा गया था कि "'ज्वालामुखी' उन बेचारों, गरीबों की आह है। भूखों का चीत्कार है और दीन किसानों का करुण क्रंदन है, जो दिन रात परिश्रम कर रहे हैं, परंतु उन्हें भरपेट दाने नहीं मिलते, केवल वही नहीं यह उन क्रांतिकारी नौजवानों के बम के धमाके हैं, भारतवर्ष के सिंहों की पिस्तौल की गोली है। 'ज्वालामुखी', सत्य और न्याय के लिए धधकता रहेगा और इसमें अन्याय, गरीबी, गुलामी और पाश्विकता जलकर खाक हो जाएंगे और भारत कुंदन सा दिखेगा"। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 'ज्वालामुखी' भी एक क्रांतिकारी विचारों वाला सक्रिय एवं क्रांति की ज्वाला जगाने वाला समर्पित पत्र था।[5]

चिंगारी' पत्र का प्रकाशन क्रांतिकारी युवकों द्वारा गुप्त रूप से मार्च, 1932 ई. में किया गया था। जो लेखक व सहयोगी शंखनाद पत्र के थे, वही चिंगारी का भी कार्य देखते थे। इसके प्रथम अंक में कहा गया था कि "यह प्रथम अंक पाठकों के सेवार्थ उपस्थित है, कल से सी चिंगारी की रोशनी में सरकार के कुछ काले कारनामे भी जनता के सामने उपस्थित किए जाएंगे"। लेख दोनों पृष्ठ पर रहा करेंगे। विद्यार्थियों को प्रेरित करती हुई चिंगारी की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं– "फ्रांस, इटली, रूस और आयरलैंड आदि देशों में नौजवान विद्यार्थी स्वतंत्रता के संग्राम में सदा आगे रहे हैं। क्या हिंदुस्तान के विद्यार्थी पीछे रहेंगे?" इस प्रकार देखते हैं कि चिंगारी ने युवाओं में राष्ट्र के प्रति सजगता, उत्साह एवं चेतना जगाने का प्रयास किया। इसका समाचार– "श्री बिहारी लाल की दुकान पर पिकेटिंग बराबर जारी है। वहाँ एक कॉन्स्टेबल दिन भर मौजूद रहता है, जो स्वयं सेविका पिकेटिंग के लिए आती है, गिरफ्तार कर ली जाती है। शाम तक कुल 15 स्त्रियां गिरफ्तार हुईं"। इस समाचार लेख से पता चलता है कि महिला स्वयं सेविकाएं भी इस तरह के पत्रों के प्रकाशन से लेकर वितरण तक के कार्यों में संलग्न थीं।

'रणचंडी' भी देश के युवा वर्ग को शस्त्र बल के साथ स्वतंत्रता संग्राम में कूदने के लिए प्रोत्साहित करता रहा और अपना परिचय देते हुए लिखता है–

मैं तोप हूँ तलवार हूँ बंदूक हूँ दो बार हूँ।

रण में शत्रु के लिए मैं मौत का अवतार हूँ।।

उनकी हस्ती को मिटाने के लिए बेकरार हूँ।

नारी हूँ, गो देखने में पर असल में नार हूँ।।[6]

'रणचंडी' ने अपने लेखों के माध्यम से काशी की जनता को प्रोत्साहित किया एवं उनको ब्रिटिश हुकूमत के प्रति लड़ने के लिए तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। इसने छोटे–छोटे लेखन, संपादकीय टिप्पणियों के द्वारा देश की जनता में जागृति पैदा करने और सरकार को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए भी प्रोत्साहित किया।[7]

'तूफान' और 'चंडिका' भी भूमिगत रूप से प्रकाशित होने वाले समाचार–पत्र थे। इन दोनों पत्रों का मूल्य क्रमशः एक पैसा और दो पैसा था। 'तूफान' का प्रकाशन मई मास में किया गया था। दो पन्नों वाले इस पत्र में शीर्ष भाग में एक ओजस्वी कविता अवश्य छपती थी। जैसे–

लाल क्रांति की ज्वाला भपके चले साथ भीषण तूफान।

राज सिंहासन दहल उठे हो चूर–चूर धनिकों का मान।।[8]

'तूफान' के प्रत्येक अंक में एक कविता किसी अज्ञात कवि की अवश्य प्रकाशित होती थी। 'चंडिका' उग्र विचारों की समर्थक और हिंसा में विश्वास रखने वाली थी। 'चंडिका' का संपादक– युवक सिंह (काल्पनिक नाम) हुआ करता था। 'चंडिका' पत्र के मुख्य पृष्ठ पर ही लिखा रहता था– 'जय–काली'। इसके प्रधान संपादकों में दुर्गा प्रसाद जी का नाम प्रमुख है। इसके अतिरिक्त दिनेश दत्त झा, प्रेमचंद आदि के भी लेख लिखने की सूचना प्राप्त होती है। चंडिका के शब्द अंग्रेजी सरकार के खिलाफ आग उगलते हुए हिंसा की राह का समर्थन कर, ईंट का जवाब पत्थर से देने की सलाह को इस प्रकार व्यक्त करते थे–

चार को मारकर मरने में ही मजा है।

हैजा और प्लेग से मरने से तो यह कहीं उत्तम होगा।।[9]

धर्म को परिभाषित करते हुए चंडिका कहती है कि धर्म के दो अंग होते हैं– पाप का विनाश और पुण्य की रक्षा। पाप के विनाश के लिए जो हिंसा की जाए वह धर्म का ही अंग है। अहिंसा का अर्थ यह नहीं है कि हम चोरों को अपना घर लूटने दें। दंड न देने से पाप की प्रवृति बढ़ती जाती है और वह अधिक लोगों को अधिकाधिक कष्ट देने लगता है। अतः पापी को दंड देना ही हिंसा को उत्तेजना देना है। यही बलिदान का रहस्य है। 'चंडिका' का समाचार– "जरा गुल उठने दीजिए 'रणचंडी' प्यासी हो रही है, उन्हें होने दीजिए, कुछ मजा चखिए, कुछ चखाइए तब फिर आनंद आए"। इस तरह की पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि यह भूमिगत पत्र एक दूसरे से संबद्ध थे। संभवत इनको लिखने वाले एक ही लोग हुआ करते थे, जिनको एक दूसरे के लेखों एवं क्रियाकलापों की जानकारी रहती थी। इन सबका एक ही उद्देश्य हुआ करता था देश की स्वराज्य प्राप्ति।

सन 1939 ई. राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारंभ का वर्ष रहा है। इस वर्ष काशी से प्रकाशित दो राजनीतिक पत्रों की राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन पत्रों के नाम हैं– 'चिनगारी' (साप्ताहिक) और 'आजादी' (पाक्षिक)। सप्ताहिक 'चिनगारी' का प्रकाशन 25–30 पृष्ठों में किया जाता था। इसमें केवल राजनीतिक लेखों और कविताओं का ही प्रकाशन किया जाता था। 'आजादी' उग्र कांग्रेस जनों का पाक्षिक पत्र था, जिसके प्रथम अंक का प्रकाशन 22 जुलाई, 1939 ई. को हुआ था। इस पत्र के संपादक कृपा शंकर शर्मा थे। वार्षिक मूल्य एक रुपया तथा एक प्रति का दो पैसे था। पत्र के मुख्य पृष्ठ पर दो पंक्तियों की यह कविता प्रकाशित होती थी–

आएगा मजा में कब जमाना अपना।

बहारों को सुनाएजा ताराना अपना।।[10]

प्रत्येक अंक के मुख्य पृष्ठ पर ही किसी प्रमुख कवि की ओजस्वी कविता का प्रकाशन भी किया जाता था। प्रथम अंक में सुमित्रा नंदन पंत द्वारा रचित 'साम्राज्यवाद का नाश' कविता प्रकाशित हुई। इस आजादी नामक पत्र में ओजस्वी कविताओं के अतिरिक्त राजनीतिक लेख भी प्रकाशित किए जाते थे।

उपरोक्त विवेचन से या कहा जा सकता है कि गांधी के नमक आंदोलन के बाद के नौ वर्षों में काशी की हिंदी पत्रकारिता की विशेष उन्नति हुई। इस काल की हिंदी पत्रकारिता हर प्रकार की विधाओं से गुजर कर राष्ट्रीय परिवर्तन की ओर अग्रसर तो हुई ही साथ में नवचेतना लिए हुए पाठकों के समक्ष उत्सुकता के साथ पहुंचाई जाती रही। 1940 ई. में शचीन्द्र नाथ सान्याल के संपादन में 'अग्रगामी' दैनिक का प्रकाशन हुआ था।

1940 ई. तक आते–आते भारत की पत्रकारिता के साथ–साथ काशी की हिंदी पत्रकारिता ने भी सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त किया। हालाँकि इस युग की काशी की हिंदी पत्रकारिता को बहुत से गतिरोधों का सामना करना पड़ा, किंतु दक्ष पत्रकारों की बुद्धिमत्ता एवं तेजस्विता के चलते समक्ष अवरोध बहुत मामूली साबित हुए।

सन 1942 ई. का वर्ष काशी की हिंदी पत्रकारिता के लिए दुर्भाग्य के साथ–साथ भाग्यशाली भी रहा। भारत छोड़ो आंदोलन के समय जब 'आज' का प्रकाशन पुनः बंद कर दिया गया तो 'आज' के उत्साही संपादक चुप ना बैठ सके। उन्होंने 3 सितंबर 1942 ई. को दैनिक 'खबर' का प्रकाशन कर हिंदी दैनिकों के इतिहास में एक कड़ी और जोड़ दी। 'खबर' में केवल समाचार ही प्रकाशित किए जाते थे, जो संबंधित प्रेस तथा लेखक द्वारा लिखे जाते थे। इन समाचारों में काफी कसावट एंव शुद्धता होती थी। साथ ही बाबूराव विष्णु पराड़कर के सहयोग से पुनः 'रणभेरी' का प्रकाशन हुआ। पहले की भांति इस बार भी 'रणभेरी' का सक्रिय प्रकाशन जारी रहा। पुलिस अधिकारियों ने बहुत प्रयत्न किया कि किसी प्रकार विष्णु पराड़कर जी को, जो कि इसके कर्ता–धर्ता थे, पकड़कर गिरफ्तार कर लिया जाए, परंतु प्रमाण के अभाव में सब कुछ जानते हुए भी वह विवस रहे और उनको पकड़ा न जा सका। तमाम कोशिशों के बाद जिस दिन 'रणभेरी' प्रेस पकड़ा गया, उस दिन शाम को 'रणभेरी' प्रकाशन के अंतिम कार्यकर्ता श्री दुर्गा प्रसाद खत्री ने 'लहरी' प्रेस से 'रणभेरी' का अंक निकाला और घोषणा की कि– "'रणभेरी' आजाद है, सदा आजाद रहेगी, 'रणभेरी' बजती रहेगी। पुलिस ने जिस 'रणभेरी' को पकड़ा है, वह हमारी एक शाखा है"।[11]

काशी में पत्रकारिता का इतिहास बहुत लंबा रहा है किंतु जब ब्रिटिश सरकार पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को लेकर सचेत थी और उन पर बंदिशें लगाने की फिराक़ में रही। तमाम समाचार–पत्रों का बुरी तरह से दमन किया जा रहा था, सख्त कार्रवाई की जा रही थी और कड़ी से कड़ी सजाएं भी दी जा रहीं थीं। उस समय काशी के कर्मठ,

बुद्धिजीवी एवं ओजस्वी पत्रकार ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने एवं देश की जनता को सही राह दिखाने के लिए पत्रकारिता की दुनिया में क्रांति ला रहे थे और पत्रों का प्रकाशन क्रांतिकारी तरीके से करके काशी की अद्भुत शक्ति का परिचय दे रहे थे और इसके साथ ही राष्ट्रप्रेम दिखाकर राष्ट्रीयता की भावना को भी उजागर कर रहे थे। जिससे न कि काशी की पत्रकारिता को नई दिशा एवं चेतना मिली बल्कि संपूर्ण राष्ट्रीय गौरव के लिए भी यह अद्भुत रहा। इस प्रकार हम पाते हैं कि काशी की क्रांतिकारी पत्रकारिता अद्वितीय रही है और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महतवपूर्ण स्थान रहा है।

सन्दर्भ सूचीः

1. आज. (1930). 14, 15 मई, भारत कला भवन.
2. आज. (1942). 9 अगस्त, भारत कला भवन.
3. क्रांत, म. व. (2016). स्वाधीनता संग्राम के क्रन्तिकारी साहित्य का इतिहास भाग–3. प्रवीण प्रकाशन.
4. गुलाटी, ड. श. (2011). क्रन्तिकारी आंदोलन में वाराणसी की भूमिका. दिल्लीः अंकित पब्लिकेशन्स.
5. गौड़, ध. (2016). क्रन्तिकारी अन्दोलन कुछ अधखुले पन्ने. दिल्लीः साक्षी प्रकाशन.
6. चंडिका. (1930). 02, 30 सितम्बर, 14,18 अक्टूबर, भारत कला भवन.
7. बच्चन सिंह, ड. व. (2011). बनारस के यशस्वी पत्रकार. वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन.
8. बहिष्कार. (1930). 10 अगस्त, 12, 14, 16 नवम्बर. भारत कला भवन.
9. शुक्ल, न. (2015). बाग़ी कलमें. इलाहाबादः साहित्य भंडार.
10. सिंह, ठ. प. (1990). स्वतंत्रता आंदोलन और बनारस. वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन.
11. सिंह, ड. व. (2008). काशी की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास. वाराणसीः पिल्गिम्स पब्लिशिंग.
12. सिंह, प. (2016). एक स्वतंत्रता सेनानी की डायरी. इलाहाबादः विभा प्रकाशन.

अंत टिपण्णीः

[1]गुलाटी, ड. श. (2011). क्रन्तिकारी आंदोलन में वाराणसी की भूमिका, पृष्ठ– 246–247

[2]सिंह, ड. व. (2008). कशी की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, पृष्ठ– 108, 110

[3]रणभेरी, 8 जुलाई, 5 अक्टूबर, 1930

[4]गुलाटी, ड. श. (2011). क्रन्तिकारी आंदोलन में वाराणसी की भूमिका, पृष्ठ– 251

[5]ज्वालामुखी, 13 अक्टूबर, 1930

[6]रणचंडी,1930

[7]रणचंडी, 16 सितम्बर, 1930

[8]तूफ़ान, 1932

[9]चंडिका, 30 सितम्बर, 1930

[10]सिंह, ड. व. (2008). कशी की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, पृष्ठ 141

[11]सिंह, ड. व. (2008). कशी की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, पृष्ठ 111